Written by नवेद शिकोह
Thursday, 14 June 2018 19:02

: □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□-□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ : □□□□□□□-□□□□□ □□□□, □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ : □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□ :

□□□□ □□□□□

□□□□ : रोजा इफ्तार □क मजहबी अनुष्ठान होने के साथ सोशल काज़ भी है□ ऐसे आयोजन विभिन्न धर्मों, जातियों और फिर्कों को □क प्लेटफार्म पर लाते हैं□ ऐसे कार्यक्रमों में गरीब-अमीर, आम और खास में कोई अंतर भी नहीं होता□ नफरत की राजनीति में यदि रोजा इफ्तार, होली मिलन और बड़े मंगल पर भंडारा जैसे कार्यक्रमों के बहाने जनमानस को □कत्र कर □कता की मिसाल से राजनीतिक स्वार्थ भी साधा जाये तो इस में कोई हर्ज नहीं□ मजहबी प्लेटफार्म किसी भी मौके पर इंसान से इंसान के मोहब्बत से मिलने की मिलनसारी की इजाजत देता है□

राजनीतिक रोजा इफ्तार खास और आम, अमीर और गरीब, हिन्दू-मुसलमान, ब्राह्मण और यादव, शिया और सुन्नी, सांसद, विधायक और मामूली कार्यकर्ता को □क प्लेटफार्म पर ले आता है तो यहां राजनीतिक स्वार्थ भी बुरा नहीं है□ क्योंकि नफरत और समाज को तोड़ने की राजनीति से तो □कता का स्वार्थ बेहतर ही है□

लेकिन अखिलेश जी आपका होटल ताज वाला हाइटेक रोजा इफ्तार मजहबी □तबार से भी गलत था□ चुनिंदा सपा प्रभावशाली ओहदेदारों वाली इस इफ्तार पार्टी में आपकी पार्टी के हजारों गरीब कार्यकर्ताओं का दिल टूटा होगा□ ये इस्लामी शरियत के भी खिलाफ है□ फाइव स्टार होटल के बजाय ये इफ्तार पार्टी सपा पार्टी दफ्तर या किसी आम जगह आयोजित होता तो इसमें आम सैकड़ों - हजारों कार्यकर्ता और गरीब रोजदारों को बुला कर उन्हें इज्जत भी बख्श सकते थे और इसी बहाने उन्हें आपके करीब आने का मौका भी मिलता□ रोजे और इफ्तार का आधार इस्लामी नजरिया भी यही कहता है□ राजनीतिक परिपक्वता भी यही कहती है□ समाजवाद के समता मूलक सिद्धांत भी यही कहते है□

दूसरी सब से अहम बात ये कि आपके राजनीतिक ग्लैमर में जो उलेमा/आपके खास मुसलमान और रोजदार आपकी इफ्तार पार्टी की दावत में आ गये उनका रोजा भी मकरू (शरियत के खिलाफ) हो गया□ क्योंकि शरियत के नजरि□ से फाइव स्टार होटल का मांसाहारी भोजन खाने की इजाजत नही है□ क्योंकि इस होटलों का गोश्त झटके का कहा जाता है□ झटके का मतलब जानवर को इस्लामी मानकों से ना काटना□

ना खुदा ही मिला ना विसाले सनम, ना इधर के रहे ना उधर के रहे□